बहुत सारे चूहे

बारबरा ब्रेनर

चित्र: जॉन एमिल सिमरमैन

बहुत सारे चूहे

बारबरा ब्रेनर

चित्र: जॉन एमिल सिमरमैन

नीता और उसकी माँ

एक घर में रहती थीं.

उनके घर में एक बिल्ली थी,

लेकिन घर में बहुत सारे चूहे थे.

ढेर सारे.

बेडरूम में चूहे थे.

सीढ़ियों पर चूहे थे.

रसोई में चूहे थे और कुर्सियों के नीचे चूहे थे.

एक अकेली बिल्ली

इतने सारे चूहों को नहीं पकड़ सकती थी.
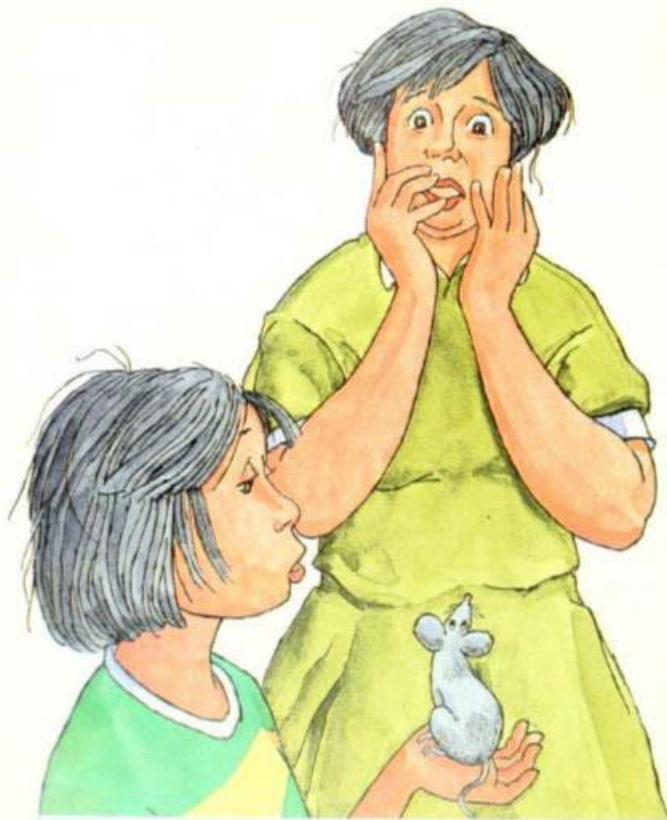
"इस घर में बहुत सारे चूहे हैं," माँ ने कहा.
"अब हमें और बिल्लियों की ज़रूरत पड़ेगी."
नीता ने कहा, "आप ठीक कह रही हैं, माँ."
फिर, नीता बिल्लियों की तलाश में निकल पड़ी.

वो बिल्लियों को बुलाती रही
और सड़क पर ऊपर-नीचे दौड़ती रही.
"बिल्ली आओ, बिल्ली आओ,
मुझे पता है तुम्हें खाने के
लिए एक मोटा चूहा कहाँ मिलेगा."

फिर बिल्लियाँ दौड़ती हुई आईं.

एक सफेद बिल्ली,

एक धारीदार बिल्ली.

एक टेढ़ी पूँछ वाली बिल्ली,

चमकती आँखों वाली एक बिल्ली,

और बिल्ली के बच्चों के साथ एक माँ बिल्ली भी.
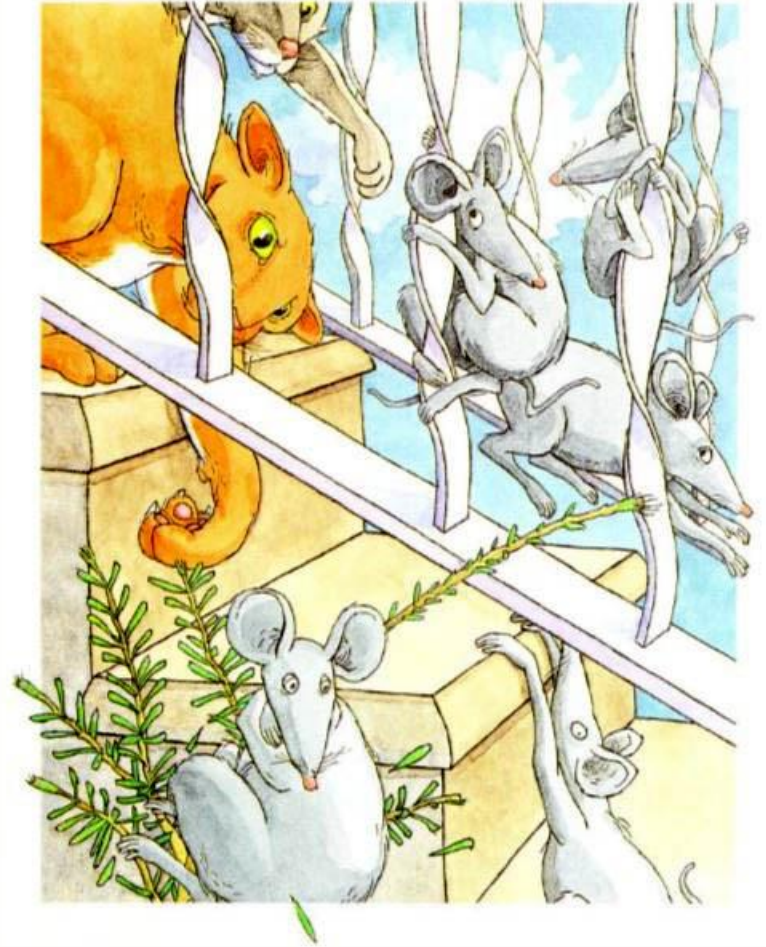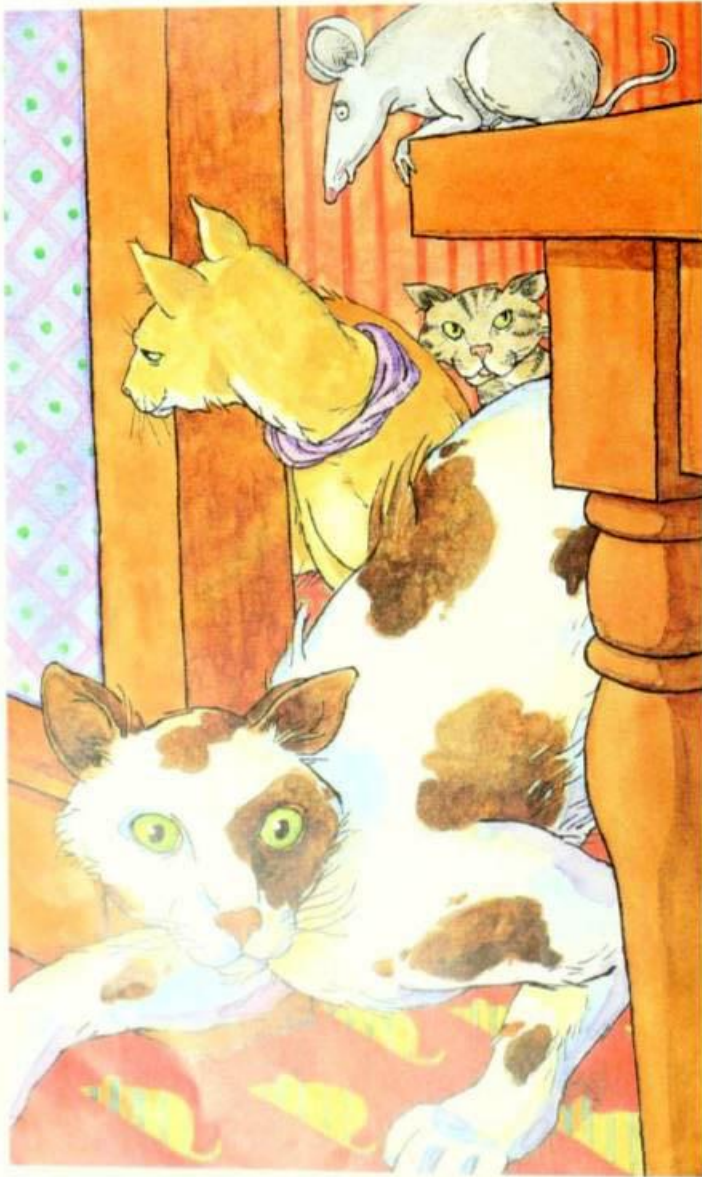
बिल्लियाँ, नीता के घर में घुस गईं,

उन्हें देखकर जल्द ही सभी चूहे भाग गए.

"यह बेहतर है," माँ ने कहा.

"अब मैं चैन से बैठकर अपना पेपर पढ़ सकूंगी."

लेकिन वो चैन से बैठ नहीं सकीं.

माँ की कुर्सी पर एक बिल्ली थी.

हर जगह बिल्लियाँ और बिल्लियां थीं!

नीता की माँ ने आह भरी.

"अब घर में बहुत सारी बिल्लियाँ हैं."

नीता ने कहा, "आप ठीक कह रही हैं, माँ."

"हमें बिल्लियों से पीछा छुड़ाने के लिए कुत्तों की ज़रूरत होगी."
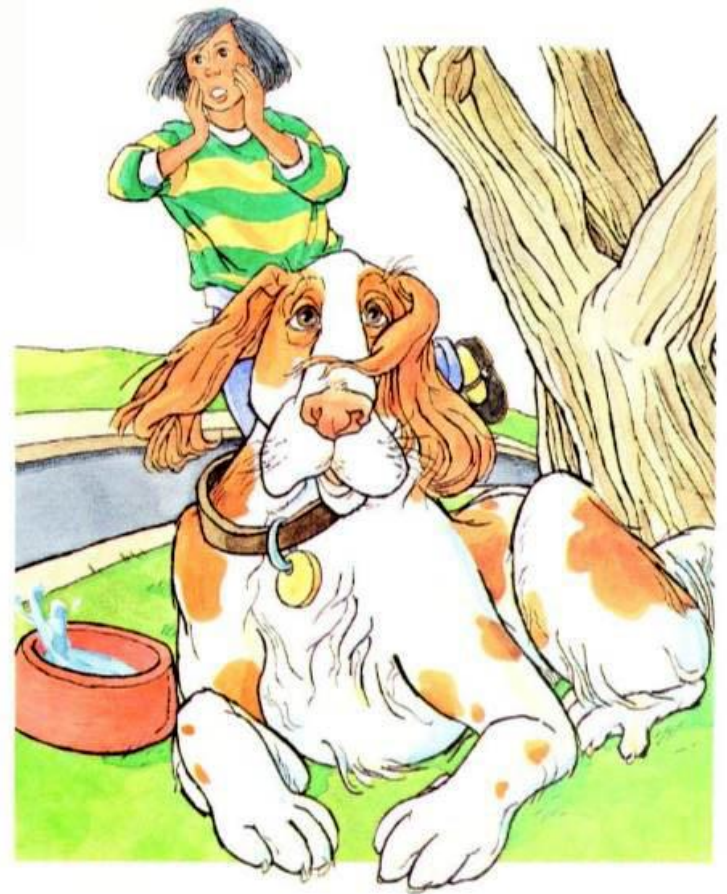
नीता सड़क पर ऊपर-नीचे दौड़ती रही.

"कुत्तों, कुत्तों, यहाँ आओ," उसने पुकारा.

"मुझे वो जगह पता है

जहाँ तुम ढेर सारी बिल्लियों का पीछा कर सकते हो."

कई कुत्ते दौड़ते हुए आये.

एक काला कुत्ता,

एक सफ़ेद कुत्ता,

एक बड़ा कुत्ता,

एक छोटा कुत्ता,

धब्बों वाला एक कुत्ता.

सारे कुत्ते घर में घुस गए,

और उन्हें देखकर

बिल्लियाँ भाग गईं!
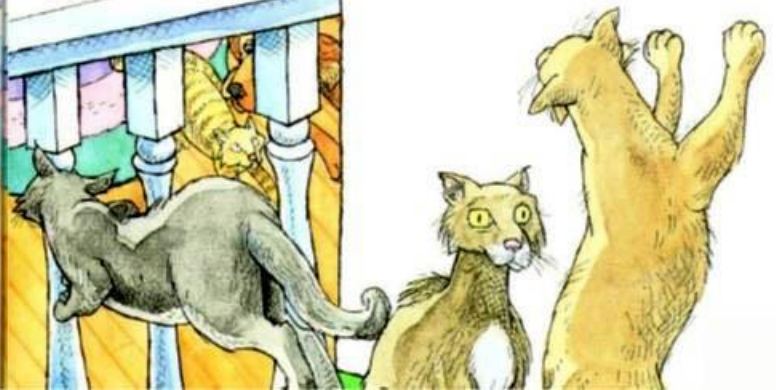
"अब मैं चैन से बैठकर अपना पेपर पढ़ सकती हूँ."

लेकिन वो चैन से बैठ नहीं सकीं.

माँ की कुर्सी पर एक कुत्ता बैठा था.

पूरे घर में हर जगह कुत्ते ही कुत्ते थे!

"हमारे घर में अब बहुत सारे कुत्ते हैं," माँ ने कहा.

नीता ने कहा, "आप ठीक कह रही हैं, माँ."

"अब हमें कुत्तों को डराने के लिए कुछ

मगरमच्छों की ज़रूरत होगी."

फिर नीता मगरमच्छ के तालाब में गई.

"मगरमच्छ, मगरमच्छ," उसने पुकारा.

"मुझे वो जगह पता है जहाँ पर तुम कुत्तों को डरा सकते हो!"

तुरंत दो मगरमच्छ उसके साथ आए.
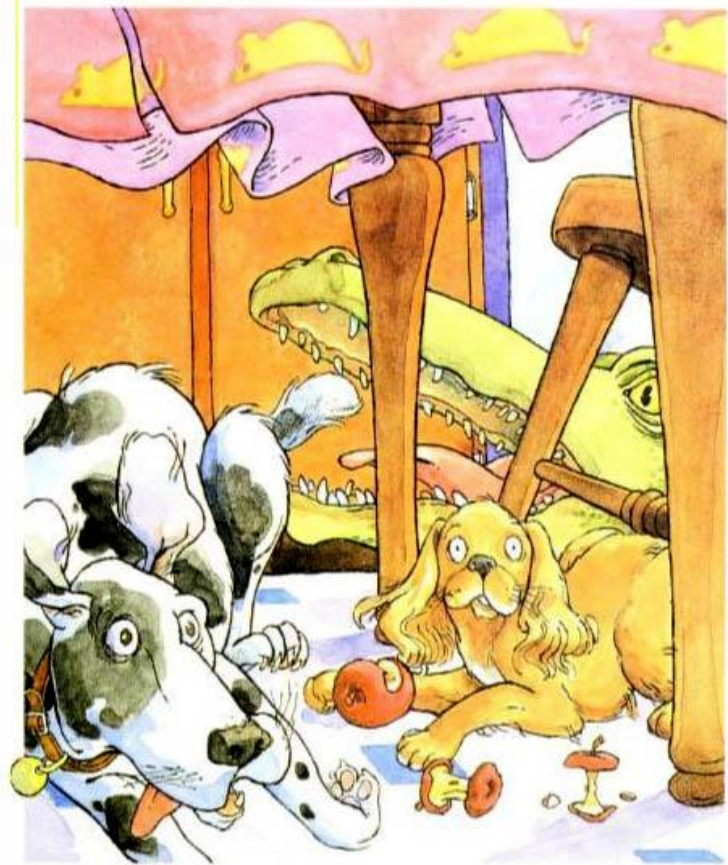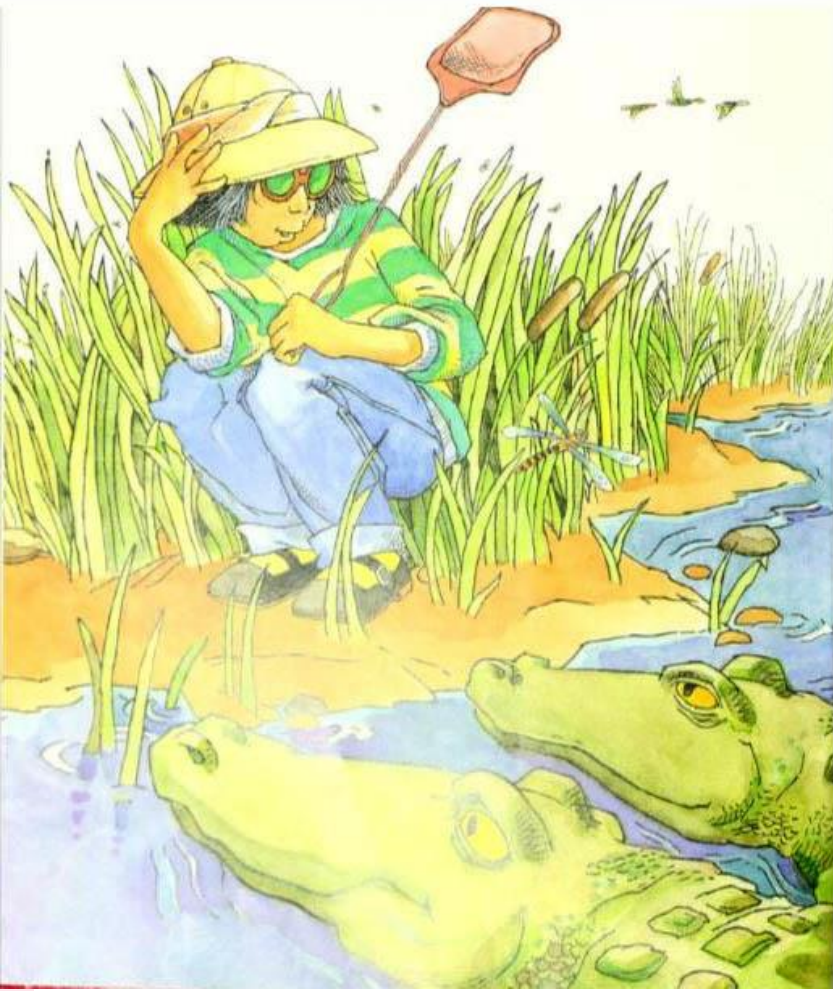
वे तालाब से रेंगते हुए बाहर निकले,

सड़क के नीचे, और फिर घर में घुस गए.

स्नैप! स्नैप! उन्होंने अपने बड़े-बड़े दाँत दिखाए.

उन्हें देख सारे कुत्ते भाग गये!
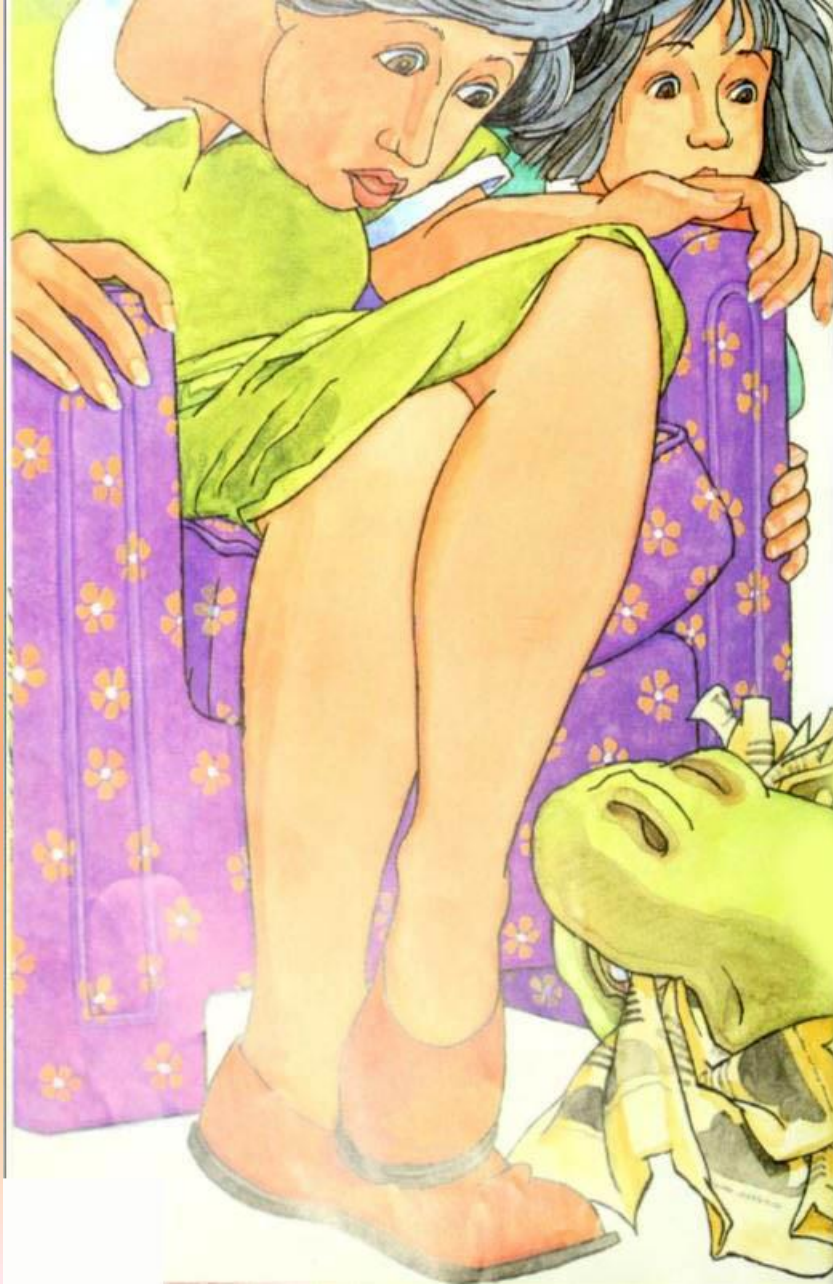
"शायद अब मैं चैन से बैठकर अपना पेपर पढ़ सकूं," माँ ने कहा.

लेकिन तभी.

स्नैप! स्नैप!

एक मगरमच्छ ने माँ का अखबार खा लिया.

"ये मगरमच्छ तो कुत्तों से भी बदतर निकले!"

माँ चिल्लाई.

"माँ, आप सही कह रही हैं," नीता ने कहा.

"मगरमच्छों को डराने के लिए अब हमें एक

हाथी की ज़रूरत पड़ेगी."
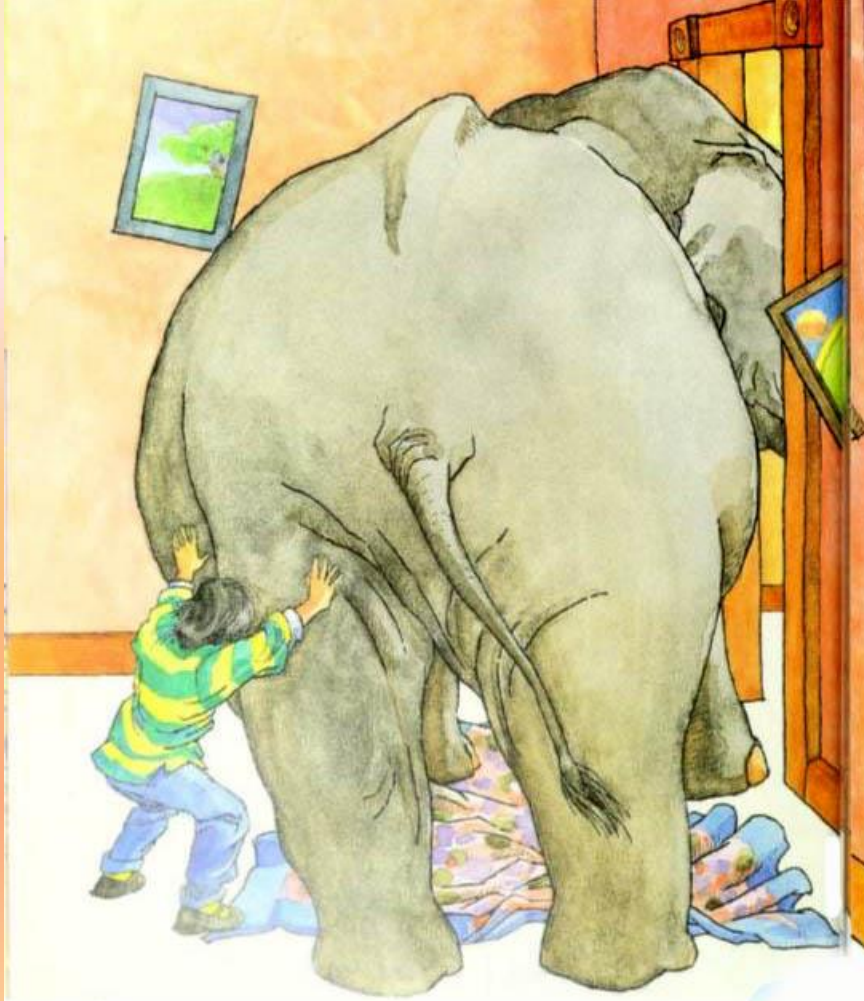
फिर नीता चिड़ियाघर गई.
वहां से उसने एक हाथी किराए पर लिया.
हाथी घर में घुस गया. थम्प! थम्प!
उससे पूरा घर हिलने लगा.
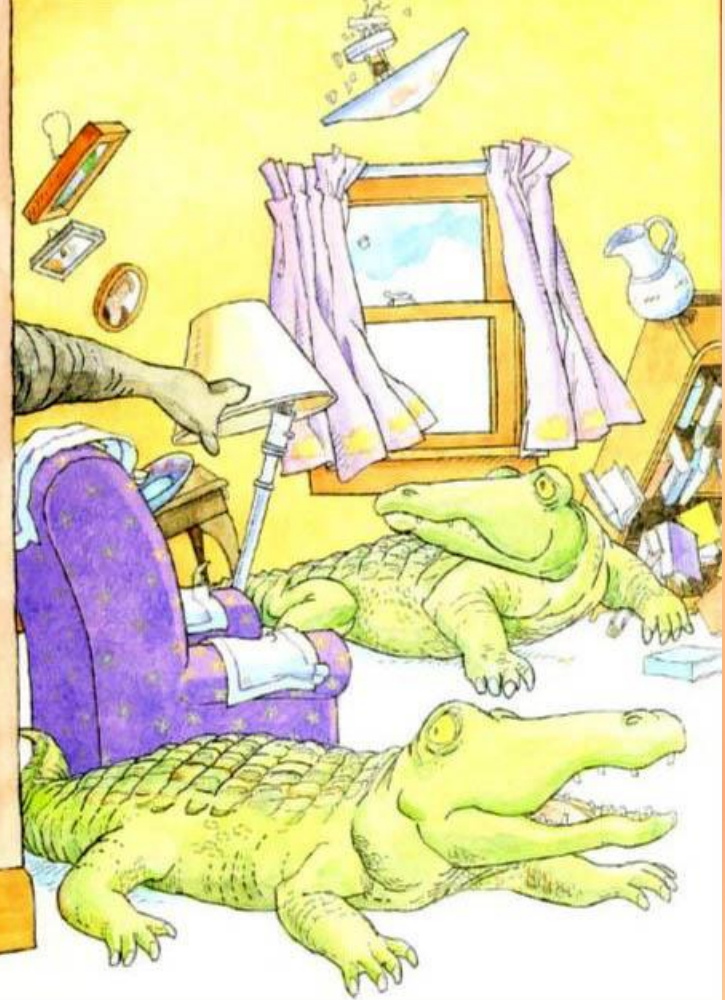
हाथी को देखकर मगरमच्छ डर गए.
वे सीढ़ियों से रेंगते हुए नीचे उतरे
और वापस अपने तालाब में चले गए.

"अब यह बेहतर है," माँ ने कहा.

"चलो अब बिस्तर पर सोने चलें."
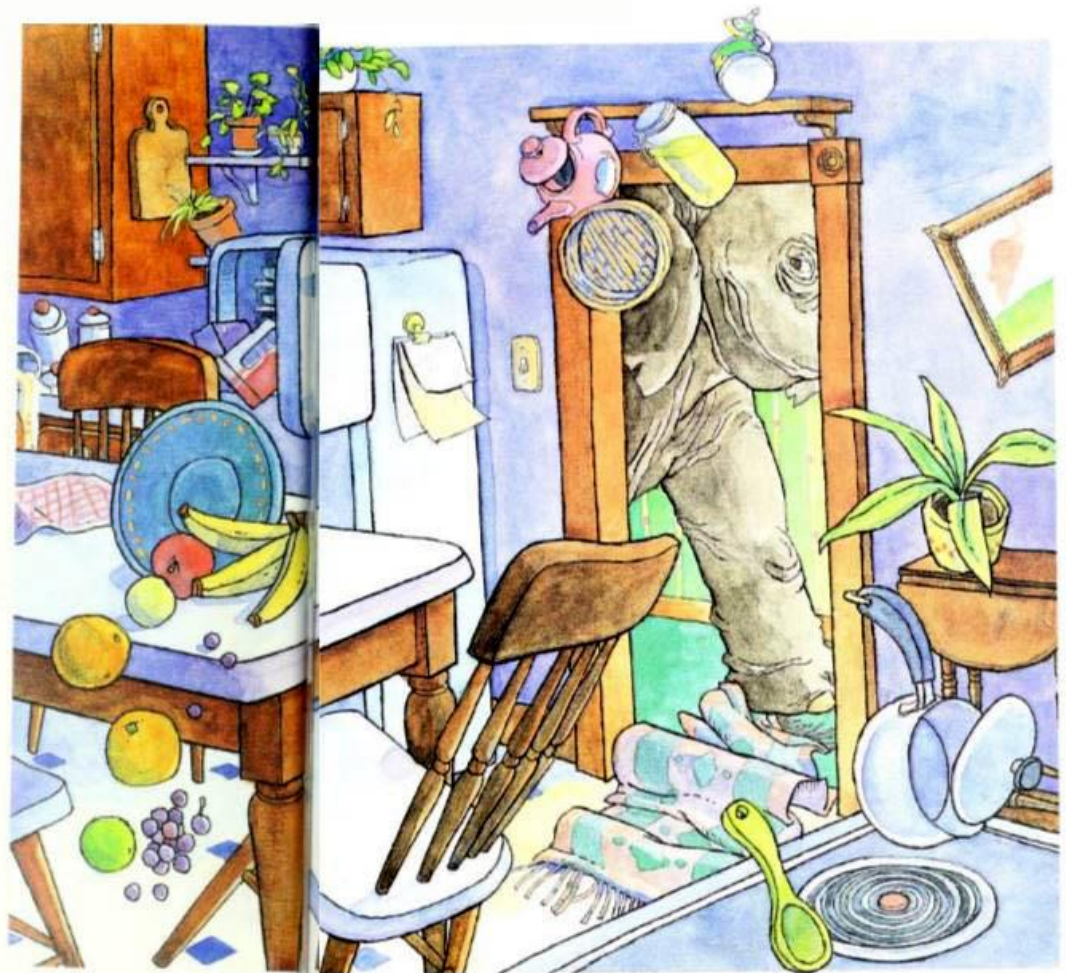
नीता और माँ लेट गईं.

लेकिन हाथी खड़ा रहा और पैर पटकता रहा.

थम्प! थम्प! थम्प!

उससे बिस्तर हिलने लगे, कुर्सियाँ टूट गईं और बर्तन नीचे गिर गए.
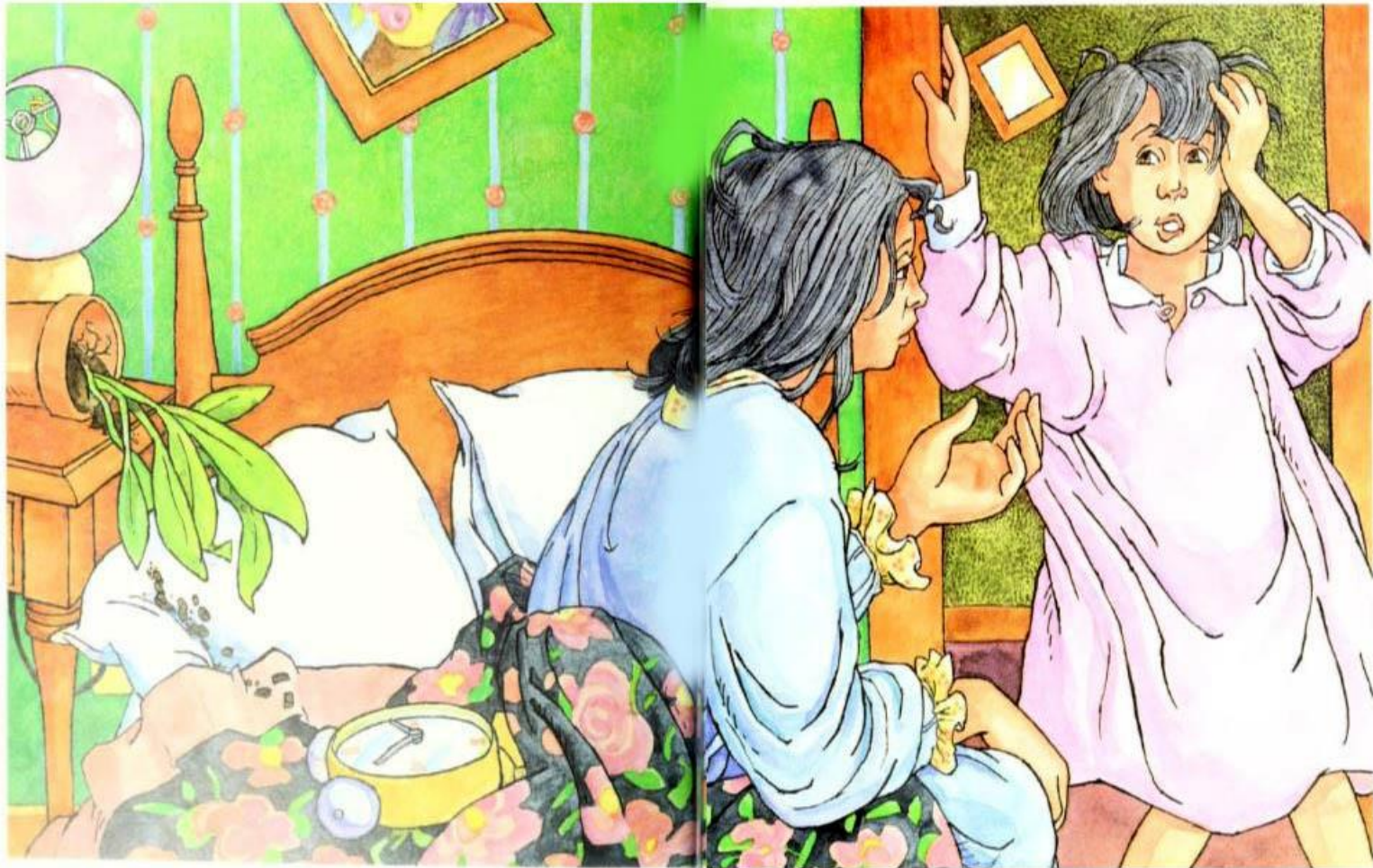
“ऐसा नहीं चलेगा,” माँ ने कहा.

"घर में एक हाथी भी बहुत अधिक है."

"आप सही कह रही हैं, माँ," नीता ने कहा.

"लेकिन केवल एक ही जीव है

जो हाथी को डरा सकता है."

"वो कौन है?" माँ ने पूछा.

"चूहा!" नीता ने कहा.

अंत